© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

# कुमारसम्भव में बिम्ब-विधान

दिनेश कुमार मौर्य
शोधच्छात्र
दी0दउ0गो0वि0वि0गोरखपुर

काव्य के साथ–साथ उसके मूल्यांकन के आधार और अनुभूति की दिशा में नित–नूतन परिवर्तन होता है। प्रत्येक समय के समीक्षक के समक्ष समसामयिक साहित्य के मूल्यांकन की कुछ समस्यायें होती हैं जो अन्य समय से सर्वथा अन्य रूप में उपस्थिति होती है परिणामतः समीक्षा के सूक्ष्म दृष्टि को और संवेदनशील बनाना पड़ता है। काव्य का उद्देश्य तो वही रहता है– आनन्द प्राप्त करना। परन्तु समय की ऐतिहासिक आवश्यकताओं के अनुसार आनन्द प्राप्त करने की प्रणाली और उस कलात्मक आनन्द की मौलिकता तथा श्रेष्ठता की परीक्षा करने वाली पद्धति में भी न्यून परिवर्तन करना पड़ता है। आधुनिक युग में, आलोचना के मानदण्ड की समस्या को लेकर अनेक विवाद हो चुके हैं। जो आलोचक काव्य को इतिहास के वृहत्तर परिप्रेक्ष्य में रखकर देखने के समर्थक हैं, उनके सामने यह मानदण्ड की समस्या उतने विकट रूप में नही उपस्थिति होती। उनके निकट सभी समयों के साहित्य की समीक्षा के लिए एक सामान्य पद्धति होती है– कालजयी साहित्य की श्रेष्ठतम कृतियाँ।

बिम्बविधान एक ऐसा कलात्मक प्रतिमान है जिसका सम्बन्ध सहज ही विषयवस्तु और रूप दोनो से स्थापित हो जाता है। आन्तरिक पक्ष का अविच्छेद्य अंग तथा सम्प्रेषित अनुभूति का मूर्त वाहक होने के कारण बिम्ब रचना–प्रक्रिया का एक ऐसा केन्द्र–बिन्दु होता है, जिस में काव्य का आभ्यान्तर और बाह्य दोनों समाहित हो जाते हैं। अतः बिम्ब को केन्द्र बनाकर कृति के आन्तरिक सौन्दर्य और बाह्य सौन्दर्य दोनों की सम्यक् विवेचना की जा सकती है।

साहित्य समीक्षा के क्षेत्र में 'बिम्ब' शब्द एक नवीन शब्द है, यह शब्द पश्चिमी काव्यशास्त्र में 'इमेज' शब्द का पर्यायवाची है। पाश्चात्य काव्यशास्त्र बिम्बरचना को ही काव्य कला की कसौटी मानता है। अंग्रजी शब्द 'इमेज' हिन्दी आलोचना में 'बिम्ब' शब्द से जाना जाता है। बिम्ब का अर्थ अनेक विद्वानों ने अपनी–अपनी रचनाओं में किया जाता हैः– कोश के अनुसार '' किसी वस्तु का मानश्चित्र या मानसी प्रतिकृति'' और ''कल्पना अथवा स्मृति में उपस्थित चित्र अथवा प्रतिकृति''[1]

संस्कृत भाषा में बिम्ब शब्द का अर्थः– सूर्यमण्डल, चन्द्रमण्डल, कोई गोलाकार या मण्डलाकार सतह, प्रतिमा, छाया, प्रतिबिम्ब, शीशा, दर्पण, कलश, उपमित पदार्थ बताया गया है[2]।

काव्य में बिम्ब विधान का अर्थ है सम्मूर्तन व्यापार। इसलिए इसे रूप योजना, चित्रविधान आदि शब्दों से भी उल्लिखित किया जाता है। बिम्ब एक प्रकार का शब्द चित्र है जिसके द्वारा कवि अपने विचारों एवं मन में भावनायें अमूर्त रूप में विद्यमान रहती हैं। उन्हें इन्द्रियगम्य रूप में पुनः प्रस्तुत कर देना बिम्ब विधान कहलाता है। जो वस्तु सामने नहीं है उन्हें ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जानने योग्य बना देना बिम्ब का काम है।

हिन्दी के आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार–''काव्य का काम है 'कल्पना' में बिम्ब या 'मूर्त भावना' उपस्थित करना।[3]''

डा0 केदारनाथ सिंह के अनुसारः–''बिम्ब वह शब्दचित्र है जो कल्पना के द्वारा ऐन्द्रिय अनुभवों के आधार पर निर्मित होता है।''

अर्थात् बिम्ब एक शब्दचित्र है उसका निर्माण कल्पना के द्वारा होता है, उसका निर्माण के लिए ऐन्द्रिय अनुभव के आधार का होना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रसिद्ध बिम्बवादी कवि ''एजरा पाउंड'' ने बिम्ब की परिभाषा इस प्रकार दी है–'' बिम्ब वह है जो काल की तात्कालिकता में बौद्धिक और भावात्मक संसृष्टि को उपस्थित करता है।

**आई0ए0 रिचर्डस के अनुसारः**–बिम्ब का जो स्वरूप स्थिर किया है वह इस दृष्टि से अधिक विचारणीय हैः बिम्ब एक दृश्यचित्र, संवेदना की एक अनुकृति, एक विचार, एक मानसिक घटना, एक अलंकार अथवा दो भिन्न अनुकृतियों के तनाव से बनी एक भावस्थिति कुछ भी हो सकता है[4]।

कवि मानव मन के सहज अकृतिम, गतिशील तथा जटिल संवेगों का भाषा के जीवन्त माध्यम के द्वारा शाब्दिक निर्माण करता है तो उसे समीक्षा की आधुनिक पदावली में 'बिम्ब विधान' कहते हैं बिम्बों का प्रयोग वर्ण्य विषय के सुन्दर अभिव्यंजना के लिए किया जाता है।

यद्यपि महाकवि कालिदास के समय में बिम्ब विचार नहीं होता था फिर भी कालिदास का बिम्ब क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है उनके काव्य में जिन वस्तुओं का विधान हुआ है वे प्राकृतिक और मानव–जीवन दोनों से सम्बन्धित है।

प्रकृति के अनन्य प्रेमी होने के कारण कालिदास ने प्रकृति का वर्णन अपने काव्यों में बहुत ही सूक्ष्म रूप से किये हैं वे प्रकृति के सूर्योदय, चन्द्रोदय, ऋतु, काल, पेड़–पौधे, नदी–तालाब इत्यादि का बहुत ही सुन्दर तरीके से प्रयोग किये हैं।

वसन्त ऋतु कवि का प्रिय ऋतु है। 'कुमारसम्भवम्' में वसन्त एक पात्र है। कामदेव के मित्र के रूप में वह उसकी सहायता हेतु चराचर पर अपना प्रभाव जमा लेता है। तृतीय सर्ग में वसन्त का बड़ा सजीव चित्रण हुआ है। अतः प्रारम्भ में ही सूर्य को नायक एवं दक्षिण दिशा को खण्डिता नायिका का रूप देते हुए कहते है।

**कुवेर गुप्तां दिशमुष्णरश्मा। गन्तुं प्रवृत्ते समये विलड.घ्य।**
**दिग्दक्षिण गन्धवहं मुखेन व्यलीकनिश्वासमिवोत्ससर्ज।।**[5]

असमय वसन्त विस्तार के कारण सूर्य के उत्तरायण होने एवं मलय पवन बहने के प्राकृतिक व्यापार के लिए कवि ने एक संश्लिष्ट सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत किया है। यहाँ बिम्ब कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषणों पर टिका हुआ है। 'समय' शब्द अपेक्षित बिम्ब विधान में बड़ा महत्त्वपूर्ण है। वसन्त कामदेव का परममित्र है। वसन्त ने कामदेव के लिए एक आम्रमंजरी का सुन्दर बाण संचार करता है। एक कुशल कारीगर का दायित्व निभाता है। भ्रमरों के रूप में कामदेव का नाम भी बाणों पर अंकित कर दिया।

**सद्यः प्रवालोद्गमचारू पत्रे नीते समाप्तिं नक्चूतबाणे।**
**निवेशयामास मधुर्द्विरेफान, नामाक्षराणीव मनोभवस्य।।**[6]

यहाँ 'प्रवालपत्रे' व 'नक्चूतबाणे' में रूपक व 'नामाक्षराणीव' में उत्प्रेक्षा मिलकार मधु को 'शिल्पी' का बिम्ब प्रदान करते हैं।

कवि वपस्थली में नायिका की कल्पना करता है। द्वितीया के चन्द्रमा जैसी टेढ़ी आकृति वाले पलाश के लाल–लाल अधखिले फूल ऐसे प्रतीत होते थे मानों वसन्त रूपी पुरूष से भोगी गई वनस्थली रूपी स्त्री के शरीर पर ताजे–ताजे नख के क्षत दिखाई दे रहे हैं।

**बालेन्दुवक्राण्यविकासभावाद्गमभुः पलाशन्यतिलो हितानि।**
**सद्यो वसन्तेन समागतानां नखक्षतानीव वनस्थलीनाम्।।**[7]

कालिदास ने वसन्त में कोयल के मधुर कूक का प्रभाव 'कामदेव की बाण' के बिम्ब के रूप में प्रस्तुत किया है।

**मधु द्विरेफः कुसुमैकपात्रै पपौ पियां स्वामनुर्वतमानः।**
**श्रृंगेण च स्पर्शनिमीलिताक्षीं मृगीकण्डूयत कृष्णसारः।।**[8]

कालिदास ने कई स्थानों पर ऋतुओं को अप्रस्तुत बिम्ब के रूप में वस्तुओं की तुलना के लिए प्रस्तुत किया है। 'कुमारसम्भव' में नये रेशमी वस्त्रधारिणी चन्द्रमुखी पार्वती के लिए शरदयाामिनी का बिम्ब लाया गया है।

जिस प्रकार शरद् ऋतु के संसार में व्याप्त होते ही पूर्ण चन्द्रमा की किरणों से कुमुद खिल उठते हैं, जल निर्मल हो जाता है उसी प्रकार पूर्ण चन्द्र जैसी कान्ति वाले पार्वती के मुख को देखकर शंकर जी के नेत्र खिल उठे तथा प्रसन्न हो गया।

**तथा प्रवृद्धाननचन्द्रकान्त्या प्रफुल्लचक्षुः कुमुदः कुमार्या।**
**प्रसन्नचेतः सलिलः शिवोऽभूत्संसृज्यमानः शरदेव लोकः।।**[9]

कालिदास का सन्ध्यावर्णन बिम्बों का भण्डार है। सन्ध्या का आलम्बन रूप में वर्णन हुआ है। शिव और पार्वती का गन्धमादन पर्वत पर सन्ध्या बिम्बग्राही और मनोहरी वर्णन है। शिव कहते हैं–

**संक्षये जगदिव प्रजेश्वरः संहरत्यहरसाव हर्षतिः।**[10]

हे मधुर भाषण करने वाली पार्वती ! देखो पश्चिम आकाश में लटके हुए सूर्य ने अपनी लम्बी छाया से इस तालाब के जल में सोने का पुल सा बना लिया है।

**पश्य पश्चिमदिगन्तलम्बिना निर्मितं मितकथे विवस्ता।**
**दीर्घया प्रतिमया सरोम्भसां तापनीयमिव सेतुबन्धनम्।।**[11]

कालिदास ने रात्रि के एक से बढ़कर एक बिम्ब प्रस्तुत किये हैं इस अंधेरे के कारण न तो ऊपर दिखाई दे रहा है न नीचे न तो आस–पास दिखाई दे रहा है न पीछे ही। इस रात की गोद में अन्धकार सक घिरा हुआ संसार ऐसा लग रहा है मानों गर्भवास के समय गर्भ की झिल्ली से घिरा हुआ कोई बालक हो।

**नोर्ध्वमीक्षणगतिर्न चाप्यधो नाभितो न पुरतो न पृष्ठतः।**
**लोक एक तिमिरौधवेष्टितौ गर्भवास इव वर्तते निशि।।**[12]

कालिदास के प्राकृतिक बिम्ब में नदियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'कुमारसम्भवम्' में आकाशगंगा का वर्णन कवि ने प्रत्यक्ष कर दिया है। पार्वती को पूर्व जन्म की सारी विद्यायें उसी प्रकार पाप्त हो गई जिस प्रकार शरद् ऋतु में हंसपंक्तियाँ स्वयमेव गंगा में आ जाती है और रात्रि में प्रभा महौषधियों में आ जाती है।

**तां हंसमालाः शरदीव गंगा महौषधिं नक्तमिवात्मभासः।**
**स्थिरोपदेशामुपदेशकाले प्रपेदिरे प्राक्तनजन्मविद्याः।।**[13]

उमा व शुभ्र हंसमाला के साथ शुभ्रविद्या एवं दोनों की स्वतः गति में एक सुन्दर साम्य है।

तप के कारण पार्वती वैसे ही तप जाती है जैसे ग्रीष्म ऋतु में पृथ्वी। नए–नए बादलों की बूँद वर्षा से सिंचित होकर तपी हुई पृथ्वी के साथ ही ऊपर जाने वाली भाप छोड़ने लगी। यहाँ उनकी शरीर से उठने वाली भाप और पृथ्वी पर पड़ने वाली वर्षा के बूँदों से उठने वाली भाप में साम्यता दिखाई गयी है।

**निकामतप्ता विविधेन वह्निना नभश्चरेणेन्धनसम्भृतेन सा।**
**तपात्यये वारिभिरूक्षितानवैर्भुवा सहोष्माणममुन्चदूर्ध्वगम्।।**[14]

पर्वत–शिखरों, कन्दराओं आदि का वर्णन कवि के काव्यों में प्रस्तुत व अप्रस्तुत रूप में प्राप्त होते हैं। हिमालय से तो कवि का विशेष अनुराग हैं पौराणिक कथाओं के आधार पर कवि में हिमालय को न केवल

मानव स्वरूप, अपितु देवस्वरूप प्रदान किया है कवि ने हिमालय का रूप गुण वैशिष्टय का वर्णन करते समय एसकी स्थिति का भव्य प्रस्तुत किया है।

**अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः।**
**पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य,स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।**[15]

यहाँ उत्प्रेक्षा के आधार पर एक सुन्दर बिम्ब प्रस्तुत है। 'पृथ्वी का मानदण्ड' इस छोटे से बिम्ब में विशाल अर्थ समाया हुआ है।

कालिदास ने पशु–पक्षियों तथा अन्य जन्तुओं के विविध चित्र प्रस्तुत किये हैं। जिनसे मुख्तया गज, मृग, अश्व, गाय आदि महत्त्वपूर्ण है पार्वती की जाँघ के लिए हाथी की सूंड़ का बिम्ब उपस्थित किया गया है।

**नागेन्द्रहस्तास्त्वचिकर्कशत्वादेकान्तशैत्यात्कदली विशेषाः।**
**लब्ध्वापि लोके परिणाहि रूपं जतास्तदूर्वोरूपमानवाह्यः।।**[16]

नायिका का रूप–चित्रण आलम्बन का परिपोषण है। महाकवि ने अपनी कृतियों में नायिकाओं के सुन्दर चित्र दिये हैं। उनकी नायिकायें अत्यन्त रूपवती है इसलिए कवि ने उनके अलौकिक सौन्दर्य को अनेक अलौकिक बिम्बों से रूपायित किया है। कुमारसम्भव में पार्वती के सौन्दर्य का विशद् चित्रण हुआ है।

कालिदास ने पार्वती के नख–शिख, ध्वनि, गति, अवलोकन, स्मित, सुगन्ध निदर्शना, प्रतीप, अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा, दीपक, व्यतिरेक आदि के आधार पर सादृश्य विधान किया गया है जो सौन्दर्य के अनेक रूपों को प्रकट किया है।

**अभ्युन्नताड.गुष्ठनखप्रभाभिर्निक्षेपणाद्रागमिवोद्गिरन्तौ।**
**आजह्रतुस्तच्चरणौ पृथिव्यां स्थलांरविन्दश्रियमव्यवस्थाम।।**[17]
**चन्द्रगता पद्मगुणान्न भुड.क्ते पद्माश्रिता चान्द्रसीमभिख्याम्।**
**उमामुखं तु प्रतिपद्य लोला द्विसंश्रया प्रातिमवापलक्ष्मीः।।**[18]

'कुमारसम्भवम्' के नायक देवाधिदेव भगवान शंकर हैं। समाधिस्थ शिव एक पात्र के रूप में चित्रित हुए हैं। शिव वीरासन लगाये हुए हैं। शरीर का पूर्वार्ध सीधा और स्थिर है हाथ उत्तान भाव से बधा है, दुहरी रूद्राक्ष माला कान लपेटी हुई है। कमर पर मृग छाला गाँठ लगाकर बाँध रखी हैं। तीनों नेत्र निर्निमेष भाव से नासाग्र पर टिकाये हुए हैं।

**पर्य्यड.कवन्धस्थिरपूर्वकायमृज्वायतं सन्नमितोभयांसम्।**
**उत्तानपाणिक्ष्यसन्निवेशात् प्रफुल्लराजीवमिवाड.कमध्ये।।**[19]

समाधिलीन शिव का सम्पूर्ण बिम्ब सजीव होकर कल्पनाचक्षु के समक्ष उपस्थित हो जाता है। शिव जी के इस निश्चल स्थिति को कवि विभिन्न अप्रस्तुतों से गोचर कराते हैं।

**अवृष्टिसंरम्भमिववाम्बुवाहमपामिवाधारमनुन्तरड.गम्।**
**अन्तश्चराणां मरूतां निरोधन्निवातनिश्कम्पमिव प्रतीपम्।।**[20]

कालिदास ने बिम्ब साम्य के आधार पर पुरूष के लिए 'दीपक' व स्त्री के लिए 'दीपशिखा' का बिम्ब चुना है। पर्वतराज पुत्री के जन्म से उसी प्रकार पवित्र व शोभायमान हो जाते हैं जैसे–'अतीव प्रकाशयुक्त शिखा से दीपक'

**प्रभामहत्या शिखयेव दीपस्त्रिमार्गयेवत्रिदिवस्य मार्गः।**
**संस्कारवत्येव गिरा मनीषी, तथा सपूतश्च विभूषितश्च।।**[21]

कालिदास ने अपने काव्य में भावों वे स्थितियों को स्पष्टता व रोचकता देने के लिए यथा स्थान, पुराण, रामायण, महाभारत का आश्रय लिया है। कालिदास ने पौराणिक कथाओं द्वारा बड़ी कुशलता से बिम्ब

निर्माण किया है। 'कुमारसम्भवम्' में पर्वतों, समुद्र, चन्द्र आदि आदि से सम्बन्धित कथा प्रसंग को बिम्बायित किया है। जैसे पुराणों में उल्लिखित मेरू पर्वत को कालिदास ने विश्व का साधन बनाया है। मेरू को पृथ्वी के दोग्धा होने की बात भी कवि ने कही है।

**यं सर्वशैलाः परिकल्प्यः वत्सं, मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे।**
**भास्वन्ति रत्नानि महौषधीश्च, पृथुपष्टिां दुदुहुर्धरित्रीम्।।**[22]

इन्द्रिय संवेदनाओं में दृश्य संवेदना प्रमुखतम है। नेत्र इन्द्रिय ही ज्ञान का प्रमुख साधन है। इसलिए काव्यात्मक बिम्बों में चाक्षुष बिम्बों की संख्या सबसे अधिक रहती

महाकवि कालिदास के काव्य में भी दृश्य बिम्बों की प्रधानता है मनुष्य और वस्तुओं के सम्बन्ध में 'कवि का ज्ञान क्षेत्र जितना विस्तृत है उतने ही विविध उनके दृश्य बिम्ब हैं। कालिदास के दृश्य बिम्बों की प्रमुखता उनकी पूर्णता है। कवि की प्रवृत्ति अधिकतर सर्व अंग चित्रण की रही है। 'कुमारसम्भवम्' का हिमालय वर्णन समाधिस्थ शिव का वर्णन ऐसे व्यापक चित्र है जो वर्ण्य विषय को पूर्णता के साथ प्रस्तुत करते हैं। पार्वती का रूप चित्र भी नख–शिख के सूक्ष्म बिम्बों के रूप में दिया गया है। तपस्यारत पार्वती के शारीरिक सौन्दर्य का बिम्ब किंचित रेखाओं के सहारे ही खड़ा कर दिया है।

**स्थिताः क्षणं पक्ष्मसु तडिताधराः पयोधरोत्सेधनिपातचूर्णिता।**
**वलीषु तस्याः स्खलिताः प्रपेदिरे चिरेण नाभिं प्रथमोदविन्दवः।।**[23]

गतिहीन व एकाएक निश्चल हुई अवस्था को कवि ने चित्रलिखित अवस्था से विचित्र किया है जो बहुत सार्थक है।

**अमी च कथमादित्याः प्रतापक्षतिशीलताः।**
**चित्रन्यस्था इवगताः प्रकामालोकनीयताम्।।**[24]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कालिदास ने अपने ग्रन्थ 'कुमारसम्भवम्' में सभी प्रकार के बिम्बों का निर्माण किया है जो बिम्ब सिद्धान्त में आचार्यों के द्वारा निर्धारित किया गया है यद्यपि कि बिम्बसिद्धान्त आधुनिक आलोचना पद्धति है फिर भी प्राचीन काव्यों में इसका प्रयोग जाने–अनजाने या स्वतः हुआ है।[25]

---

[1] चैम्बर्स ट्वेन्टिएथ सेन्चुरी डिक्शनरी
[2] संस्कृत हिन्दी कोश–वामन शिवराम आप्टे
[3] चिन्तामणि– पृ0स0–228
[4] आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्बविधान पृ0सं0–27,डॉ0 केदार नाथ सिंह
[5] कुमारसम्भवम्, प्रद्युम्न पाण्डेय, चौखम्भा प्रकाशन–3/25
[6] वही– 3/27
[7] वही– 3/29
[8] वही– 3/36
[9] वही– 7/74
[10] वही– 8/30
[11] वही– 8/34
[12] वही– 8/56
[13] वही– 1/30
[14] वही– 5/23

[15] वही– 1/1
[16] वही– 1/36
[17] वही– 1/33
[18] वही– 1/43
[19] वही– 3/45
[20] वही– 1/48
[21] वही– 1/28
[22] वही– 1/2
[23] वही– 5/24
[24] वही– 2/24